जनसंख्या एवं आर्थिक संवृद्धि
Population And Economic Growth

जनसंख्या का तात्पर्य एक निश्चित भूभाग में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या से है। जनसंख्या का निरपेक्ष आकार बहुत महत्व रखता है। क्योंकि इसी के द्वारा देश में उत्पादन के पैमाना का स्तर निर्धारित होता है। जनसंख्या वृद्धि को निम्नलिखित सूत्र से मापते है-

$$l = \frac{\Delta L}{L}$$

यहां L = व्यक्तियों की संख्या, l = जनसंख्या वृद्धि दर

Δ = डेल्टा जो परिवर्तन का सूचक है।

आर्थिक संवृद्धि से तात्पर्य देश में वास्तविक उत्पाद में वृद्धि है। आर्थिक संवृद्धि को शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) के द्वारा मापा जाता है। जिसे निम्न सूत्र से स्पष्ट ~~किया~~ जा सकता है-

$$G = \frac{\Delta Y}{Y}$$

यहां, Y = शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद

G = आर्थिक संवृद्धि दर

आर्थिक विकास के प्रक्रिया में जनसंख्या वृद्धि प्रेरक तथा बाधक दोनों तरह की भूमिका निभाती है।

आर्थिक संवृद्धि में जनसंख्या की प्रेरक भूमिका

आर्थिक संवृद्धि में जनसंख्या की प्रेरक भूमिका निम्न है-

1. श्रम की पूर्ति में वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि से अर्थव्यवस्था में श्रमिक की पूर्ति में वृद्धि होती है। श्रमिक उत्पादन का सक्रिय साधन होते है। श्रमिक के अभाव में आर्थिक संवृद्धि दर

मन्द पड़ जाती है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण राष्ट्र के कुल उत्पादन में लगातार वृद्धि होती है बशर्ते देश में श्रमिक का उत्पादन क्षेत्र में उपयोग किया जाए।

2. बाजार का विस्तार

जनसंख्या में लगातार वृद्धि होने से वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रेताओं की संख्या में लगातार वृद्धि होती है इससे बाजार के आकार का विस्तार होता है। उत्पादित वस्तुओं की अधिकाधिक मात्रा विक्रय होने की संभावना बढ़ती है, निवेश बढ़ती है और आर्थिक संवृद्धि दर में वृद्धि होती है।

3. प्रभावी मांग में वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि से देश में अगर प्रभावी मांग बढ़ जाती है तो इससे आर्थिक संवृद्धि दर में वृद्धि होगी। जनसंख्या वृद्धि से आय में वृद्धि होगी और इससे बाजार के आकार में वृद्धि होगा और प्रभावी मांग में वृद्धि होगी।

4. निर्माण क्षेत्र में पूंजी निर्माण दर में वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि से प्रत्यक्ष रूप से निर्माण क्षेत्र पर विस्तारवादी प्रभाव पड़ते है। भवन निर्माण, पुल निर्माण सड़क निर्माण, नहर निर्माण आदि कार्यों में तेजी लाने में जनसंख्या वृद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। निर्माण क्षेत्र में तेजी से निवेश होने से पूंजी निर्माण दर में वृद्धि होती है।

5. विकास के अवसर

मानव संसाधन में लगातार वृद्धि से विकास के नये नये अवसर प्राप्त होते है। जनसंख्या वृद्धि से प्राप्त श्रमिक की पूर्ति अगर, उत्पादक रोजगार में प्रयुक्त

करते है तो देश की वास्तविक उत्पादन में वृद्धि होगी तथा आर्थिक संवृद्धि दर में वृद्धि होगी।

आर्थिक संवृद्धि में जनसंख्या एक बाधक तत्व

आर्थिक संवृद्धि में जनसंख्या एक बाधक तत्व की भूमिका निभाती है जो निम्नलिखित है -

1. प्राकृतिक संसाधनों के सापेक्ष जनसंख्या का घनत्व

जनसंख्या वृद्धि दर से भी महत्वपूर्ण तत्व प्राकृतिक संसाधन एवं तकनीकी के सापेक्ष जनसंख्या के घनत्व का है। अर्थव्यवस्था में साधन सीमित रहने पर जनसंख्या वृद्धि से जनसंख्या का घनत्व बढ़ जाता है। अर्थव्यवस्था में पूंजी सीमित है और जनसंख्या वृद्धि से श्रमिक की संख्या लगातार बढ़ जाती है। जनसंख्या वृद्धि तेजी से होने पर तथा भूमि एवं अन्य प्राकृतिक साधन स्थिर रहने पर उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील हो जाता है। जो आर्थिक संवृद्धि में बाधक सिद्ध होता है।

2. आयु संघटन के दृष्टि से जनसंख्या की बाधक भूमिका

जनसंख्या में वृद्धि से जनसंख्या का आयु संघटन परिवर्तित हो जाता है जो आर्थिक संवृद्धि मे मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है। मिल महोदय के अनुसार जनसंख्या में तीव्र वृद्धि से बच्चों की संख्या बढ़ जाती है जो कि अनुत्पादक जनसंख्या है। जो कि आर्थिक संवृद्धि में बाधक सिद्ध होता है।

स्टीफेन एन्क (Stephen Enke) के अनुसार, अगर देश में जन्म दर 40 प्रति हजार है तब 15 वर्ष की आयु से कम जनसंख्या कुल जनसंख्या का 40% हो जाता है। इसतरह से कुल जनसंख्या का 40% बच्चे केवल उपभोक्ता होते है उत्पादक नहीं जिससे प्रति परिवार बचत

घट जायेगा फलतः पूंजी निर्माण दर निम्न हो जायेगी और आर्थिक संवृद्धि में बाधा उत्पन्न होगी।

3. जीवन स्तर ऊँचा करने में बाधक

जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने से जीवन स्तर ऊँचा उठाने में बाधा पहुंचती है। होवर एंव कोल के अनुसार श्रमिकों की संख्या बढ़ने से कुल उत्पादन बढ़ता है किन्तु श्रमिकों की संख्या में लगातार वृद्धि होने पर प्रति श्रमिक उत्पादकता में कमी हो जाती है। जनसंख्या वृद्धि से प्रति व्यक्ति आय घट जाती है इसलिए जीवन स्तर ऊँचा करने में बाधा पहुंचती है।

4. पूँजी संचयन में बाधक

जनसंख्या में तेजी से वृद्धि से पूँजी संचयन में बाधा उत्पन्न होती है क्योंकि जितना उत्पादन में वृद्धि होती है उससे अधिक माँग रहती है क्योंकि बच्चों एंव अनुत्पादक जनसंख्या में भारी वृद्धि हो जाती है।

5. खाद्यान्न की समस्या

टी॰ आर॰ माल्थस के ~~अनुसार~~ जनसंख्या सिद्धान्त के अनुसार जनसंख्या में ज्यामितिक अनुपात (1:2:4:8:16:32) में वृद्धि होती है किन्तु खाद्यान्न उत्पादन में अंकगणितीय अनुपात (1:2:3:4:5..) में वृद्धि होती है जिससे खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो जायेगा। इसे निपटने के लिए विदेशी मुद्रा व्यय कर अनाज का आयात होगा। जो विदेशी मुद्रा पूंजीगत वस्तुओं एंव मशीनों के आयात पर व्यय होते वे अनाज के आयात पर व्यय होंगे जिससे आर्थिक संवृद्धि दर निम्न बनी रहेगी।

6. जनसंख्या विस्फोट आर्थिक संवृद्धि में बाधक तत्व

जनसंख्या वृद्धि से आर्थिक संवृद्धि प्रभावित होती है तथा

पुन: आर्थिक संवृद्धि से जनसंख्या वृद्धि प्रभावित होती है। जनसंख्या वृद्धि 5 स्तरों से गुजरती है जिसे निम्न चित्र से दर्शाया गया है—

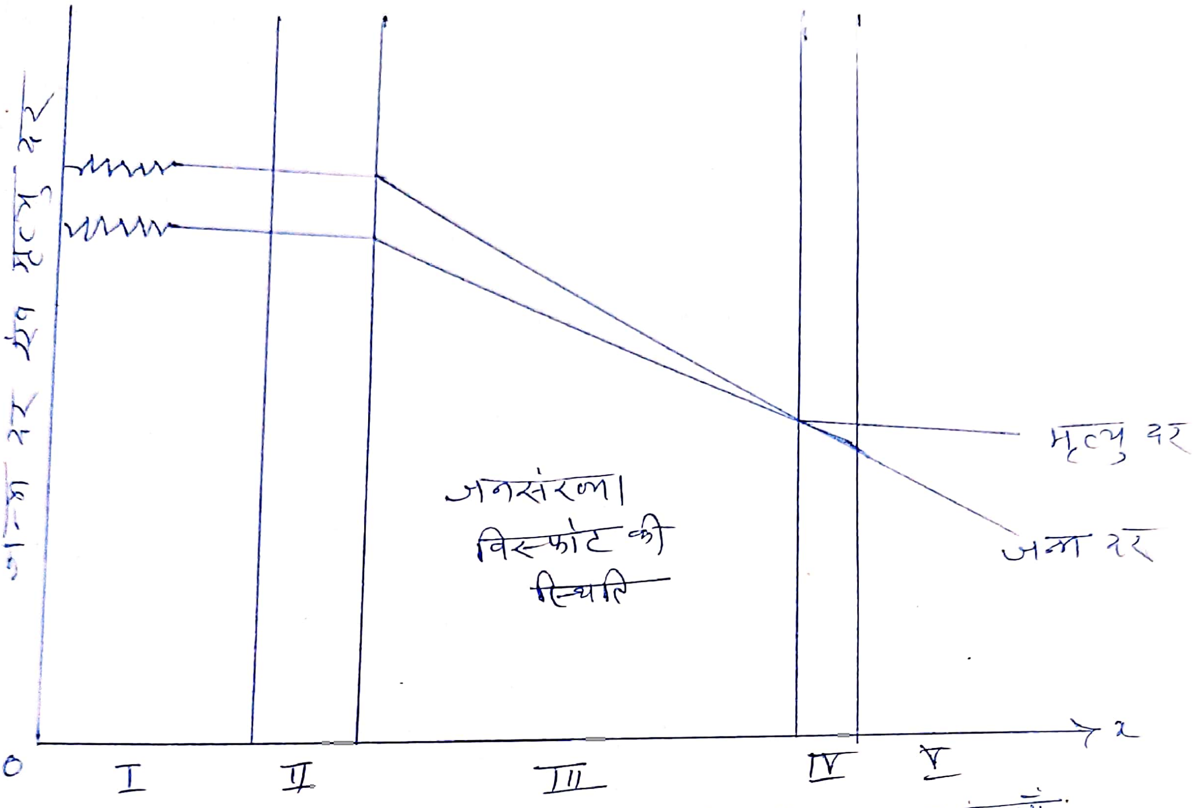

जनांकिकीय संक्रमण की पांच अवस्थाएं

जनांकिकीय स्तर

Stage I ऊंचा जन्म दर एवं ऊंचा मृत्यु दर

Stage II ऊँचा जन्म दर तथा कम मृत्यु दर

Stage III ऊँचा किन्तु ह्रासमान जन्म दर और कम मृत्यु दर (जनसंख्या विस्फोट)

Stage IV जन्म दर तथा मृत्यु दर लगभग बराबर या बहुत कम अन्तर

Stage V जन्म दर से मृत्यु दर अधिक

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि जनसंख्या विस्फोट की स्थिति आर्थिक संवृद्धि में बाधक तत्व का कार्य करता है आर्थिक संवृद्धि दर में वृद्धि कार्य

Scanned with OKEN Scanner

हेतु उपयुक्त जनसंख्या नीति का अनुसरण करना होगा जिससे आर्थिक संवृद्धि दर तीव्र किया जा सके।

इस प्रकार आर्थिक संवृद्धि में जनसंख्या प्रेरक एवं बाधक दोनों तत्वों की भूमिका निभाती है।

अर्द्धविकसित राष्ट्रों में सही जनसंख्या नियंत्रण नीति को अपनाने की जरूरत होती है जिससे आर्थिक संवृद्धि दर तीव्र किया जा सके।

—— x ——

Dr Sandhya Rani
Deptt of Economics
Maharaja College

Scanned with OKEN Scanner